Prof. Khushbu kumari
Guest Teacher
Dept. of Political science,
V.S.J. College, Rajnagar, Madhubani, lnmu

Class - B.A - 3 (H)
Paper - VI

Topic – अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन के दृष्टिकोण

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन के लिए अनेक दृष्टिकोण अथवा उपागम प्रचलित है। दृष्टिकोण का अर्थ है – मानकों का एक समूह, जिसके आधार पर सैद्धान्तिक विचार-विमर्श के लिए प्रश्न और आधार सामग्री लेने या छोड़ने का निर्णय किया जाता है। दृष्टिकोण का कार्य विचाराधीन विषय के बारे में समस्याओं और आधार सामग्री के चुनाव से आगे जाकर सिद्धान्त का रूप ले लेता है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन के लिए निम्नलिखित दृष्टिकोण प्रचलित है –

(1) ऐतिहासिक दृष्टिकोण :-

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के अध्ययन में ऐतिहासिक दृष्टिकोण सबसे प्राचीन दृष्टिकोण है। राष्ट्रों के मध्य सम्बन्धों का अध्ययन, राष्ट्रों के मध्य कूटनीतिक सम्बन्धों के इतिहास के अध्ययन के रूप में प्रारम्भ हुआ। इस दृष्टिकोण के पीछे केन्द्रीय विचार यह था कि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के स्वरूप को समझने के लिए इतिहास का अध्ययन आवश्यक है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण प्राचीन इतिहास एवं परम्पराओं पर आधारित है। इसकी मान्यता यह है कि जो कुछ भी वर्तमान में होता है वह भूतकाल का परिणाम है। इस दृष्टिकोण का विकास ब्रिटेन में हुआ, जहाँ पर अनेक

Scanned with CamScanner

Page No.
Date

विद्वानों ने अनेक ग्रन्थों की रचना की। उनमें से कुछ निम्न प्रकार है – अर्नोल्ड जे. टायनबी, ई. एच. कार, केनेथ ई. बोल्डिंग, क्विन्सी राइट आदि।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण की अपनी कुछ सीमाएँ हैं जो निम्न प्रकार हैं –

(i) ऐतिहासिक पद्धति के प्रयोग करने पर तत्कालीन परिस्थितियों एवं भावनाओं का प्रभाव पड़ता है जिसके कारण परिणाम अशुद्ध हो जाते हैं।

(ii) इस पद्धति से तथ्यों का संकलन मात्र ही हो सकता है।

(iii) सम्पूर्ण भूतकाल का अध्ययन सम्भव नहीं है तथा भूतकाल के अध्ययन से रूढ़िवादिता का जन्म होता है।

(iv) घटनाओं की पुनरावृत्ति ठीक उसी रूप में नहीं होती बल्कि परिस्थितियों के बदलने से उसका स्वरूप बदल जाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन में ऐतिहासिक दृष्टिकोण की आलोचना इस आधार पर की जाती है कि यह सिद्धान्त अपने में अधूरा और अपर्याप्त है। पेडलफोर्ड और लिंकन का मत है कि "वर्तमान युग में केवल राजनयिक इतिहास का अध्ययन लाभप्रद होते हुए भी पर्याप्त नहीं। आज राजनीतिशास्त्र के अध्येता को भूतकालीन इतिहास से प्राप्त जानकारी की अपेक्षा वर्तमान परिस्थितियों के सन्दर्भ में नीति-निर्धारण प्रक्रिया एवं राजनीतिक सौदेबाजी की कला का ज्ञान कहीं अधिक आवश्यक है।"

Khushbu Kumari

Scanned with CamScanner